16

आश्चर्यकर्मों का पहला समूह

(8:1-17)

यहां तक मत्ती रचित सुसमाचार में यीशु की सेवकाई को सिखाने, प्रचार करने और चंगाई देने की सेवकाई के रूप में दिखाया गया है (4:23; देखें 9:35)। अब मत्ती यीशु के आश्चर्यकर्मों का एक संग्रह देता है, जिसमें से अधिकतर आश्चर्यकर्म चंगाई देने के हैं (अध्याय 8; 9)। आश्चर्यकर्मों को तीन-तीन के तीन समूहों में बांटा गया है, जिसमें आश्चर्यकर्म की सातवीं घटना में वास्तव में दो आश्चर्यकर्म एक साथ हैं। यह विस्तार से दिए गए आश्चर्यकर्मों का जोड़ दस बना लेता है। आश्चर्यकर्मों के तीन समूहों (8:1-17; 8:23-9:8; 9:18-34) को सिखाने के लिए दो भागों के द्वारा अलग किया गया है, जो शिष्यता पर ज़ोर देते हैं (8:18-22; 9:9-17)।

यीशु ने यह आश्चर्यकर्म क्यों किए? इनसे क्या उद्देश्य पूरे किए गए? करुणामय मसीह ने हर किसी को चंगाई नहीं दी या मरने वाले हर व्यक्ति को नहीं जिलाया, इसलिए उसने जो आश्चर्यकर्म किए वे क्यों किए?

पहला तो यह कि यीशु ने मनुष्य को दुर्दशा से राहत देने के लिए और जब भी सम्भव हो मनुष्य की आवश्यकताओं को ऊंचा उठाने के लिए अचम्भे के काम किए। दूसरा, उसके आश्चर्यकर्मों से उसके मसीहा होने के दावे का वैध प्रमाण दिया गया (यूहन्ना 20:30, 31) और पुराने नियम की वे भविष्यवाणियां पूरी की गईं, जो उसके बारे में कही गई हैं (यशायाह 29:18, 19; 35:4-6)।

यीशु ने अपनी ओर लोगों का ध्यान खींचने के लिए कभी कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया, क्योंकि अपनी पूरी सेवकाई के दौरान वह ध्यान का केन्द्र बनने से दूर रहा। उसने लोगों को उसके आश्चर्यजनक कामों से परिवर्तित नहीं करना चाहा। उनका विश्वास इस बात की ओर ध्यान दिलाना था कि वह वास्तव में कौन है। पौलुस ने कहा, ''विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)।

भविष्य के विषय में, यीशु ने घोषणा की कि उसके प्रेरित आश्चर्यकर्म कर सकेंगे। उनके आश्यर्चकर्मों ने उसके आश्चर्यकर्मों की तरह ''चिह्नों'' (मरकुस 16:20; देखें इब्रानियों 2:1-4) का काम करना था। उसकी प्रतिज्ञा के पूरा होने पर प्रेरितों ने यह पुष्टि करने के लिए कि उनके द्वारा सुनाया गया वचन परमेश्वर की ओर से है, ऐसे आश्चर्यकर्म के चिह्नों का इस्तेमाल किया (2 कुरिन्थियों 12:12)।

मत्ती 8:1-17 हमें यीशु द्वारा किए गए तीन आश्चर्यकर्मों के बारे में बताता है। इन तीनों आश्चर्यकर्मों से लाभ पाने वाला हर व्यक्ति उस समूह से था, जिसे यहूदियों द्वारा निकम्मा समझा जाता था। यीशु ने एक कोढ़ी, एक अन्यजाति, और एक स्त्री को चंगाई दी।

एक कोढ़ी को चंगा करना (8:1-4)

[1]''जब वह उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। [2]और देखो, एक कोढ़ी ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा, 'हे प्रभु, यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।' [3]यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ, और कहा, 'मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा।' और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया। [4]यीशु ने उस से कहा, 'देखो, किसी से न कहना, परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि लोगों लिए गवाही हो।' ''

आयत 1. अध्याय 4 के अन्त में संकेत था कि ''भीड़ की भीड़'' यीशु के पीछे चलती थी (4:25)। अध्याय 5 के आरम्भ में और बताया गया कि उसके पीछे चलने वाली भीड़ द्वारा उसे घेरने से उसे अपने चेलों को सिखाने के लिए पहाड़ पर जाने का अवसर मिला। उस बातचीत के बाद (अध्याय 5-7), वह **उस पहाड़ से उतरा**। ऐसी ही भाषा निर्गमन 34:29 में मिलती है, जहां मूसा दस आज्ञाएं लेकर सीनै पहाड़ से उतरा था। यह तथ्य कि यीशु के **पीछे** अभी भी लोगों की **बड़ी भीड़** थी। इस बात का संकेत है कि उसके आश्चर्यकर्मों को देखने के लिए बहुत से गवाह होते थे। इन आश्चर्यकर्मों के वृत्तांत का आरम्भ और अन्त उसके आस पास होने वाली लोगों की भीड़ के हवाले के साथ ही होता है (8:1; 9:36-38)।

आयत 2. पुराने नियम के समयों की तरह यीशु के समय में भी कोढ़ कमज़ोर करने वाली बीमारी थी (लैव्यव्यवस्था 13; 14; गिनती 12:10, 12)। डॉक्टरी शिक्षा देने वाले इस पर एकमत नहीं हैं कि बाइबल के समय का कोढ़ आधुनिक कोढ़ की तरह ही है या नहीं। यह अच्छा है कि ''कोढ़'' (*lepra*) शब्द केवल एक बीमारी के लिए नहीं बल्कि त्वचा के विभिन्न रोगों के लिए है (छाल रोग, चम्बल, फुलबहरी टीबी वाला और श्वेत रक्ता)।

आश्चर्य की बात है कि इस **कोढ़ी** में यीशु के पास जाने का साहस था। व्यवस्था के अनुसार अशुद्ध कोढ़ी को समाज से दूर रहने और दूसरों को उसके निकट न आने की चेतावनी देने के लिए उसे अपने होठों के ऊपर हाथ रखकर ''अशुद्ध! अशुद्ध!'' पुकारना आवश्यक था (लैव्यव्यवस्था 13:45, 46; गिनती 5:2-4)। जब यीशु ने दस कोढ़ियों को चंगा किया तो वे ''दूर खड़े'' थे (लूका 17:13)। इसके बजाय इस कोढ़ी ने आकर **उसे प्रणाम किया**। KJV में कहा गया है कि इस आदमी ने यीशु की ''उपासना की।'' आराधना में परमेश्वर के सामने झुकने या मसीहा राजा के रूप में यीशु को आदर देने के लिए आम तौर पर इस्तेमाल किया गया यूनानी क्रिया शब्द *proskuneō* है (2:2 पर टिप्पणियां देखें)।

कोढ़ी ने यह कहते हुए यीशु से उसे चंगा करने को कहा, **''हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।''** वह उसे चंगा करने की यीशु की योग्यता पर संदेह नहीं जता रहा था; उसने केवल उसकी ओर से आश्यर्चकर्म करने की प्रभु की इच्छा पर सवाल किया। इस प्रश्न का कारण हो सकता है, क्योंकि यहूदी परम्परा के विचार से, कोढ़ पाप के लिए दण्ड था। ऐसे पापों में ईश्वरीय नाम को अपवित्र करना, शारीरिक अनैतिकता, हत्या, मूर्तिपूजा और विशेष करके झूठी निन्दा शामिल था।[1] निन्दा वाले कोढ़ का साथ मरियम द्वारा मूसा के विरुद्ध बोलने की घटना की जड़ों में था (गिनती 12:1-15)। शायद इस कोढ़ी ने तर्क दिया कि यीशु उसे

इसलिए चंगा नहीं करेगा, क्योंकि वह उसकी बीमारी को उस पाप के लिए जो उसने किया था दण्ड के रूप में मानता होगा।

आयत 3. यीशु ने कुछ ऐसा किया जो इस व्यक्ति को इस बीमारी के होने के बाद शायद किसी दूसरे ने नहीं किया: उसने **उसे छुआ**। व्यवस्था के अधीन कोढ़ी को छूना या उसके द्वारा किसी को छुए जाने की मनाही थी (लैव्यव्यवस्था 5:3-6)। किसी कोढ़ी के साथ सम्पर्क यहूदी व्यक्ति को औपचारिक रूप में अशुद्ध बना देता था। यीशु के मन की बात बताते हुए, मरकुस 1:41 कहता है कि हाथ बढ़ाकर उसे छूने पर उसे ''उस पर तरस'' आया।

यीशु ने उत्तर दिया, ''**मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा**।'' वह आदमी **तुरन्त** चंगा हो गया; रोग बिना देर किए जाता रहा। कोढ़ी द्वारा यीशु को शारीरिक सम्पर्क से अशुद्ध किए जाने के बजाय, यीशु ने ही अपनी ईश्वरीय सामर्थ के द्वारा, उस कोढ़ी को शुद्ध कर दिया। उसका मांस फिर से आ गया, जिस कारण अब वह फिर से समाज में जा सकता था। कोढ़ियों को आश्चर्यकर्म के द्वारा शुद्ध करना भविष्यवाणी के उन संकेतों में से एक था कि मसीहा आ चुका है (11:2-6)।

आयत 4. यीशु ने उस आदमी को चंगाई देने के बाद, उसे दो निर्देश दिए। पहला, उसने आज्ञा दी, ''**देख किसी ने न कहना**।'' कई बार यीशु यह निर्देश यहूदी लोगों में बेवजह उत्तेजना को रोकने के लिए देता था था, जिससे उसकी शिक्षा में हस्तक्षेप होता और रोमी अधिकारियों का ध्यान उसकी ओर जाता (9:30; 12:16; 16:20; 17:9)। कोई चकित हो सकता है कि इस निर्देश का पालन कैसे किया जा सकता होगा, क्योंकि यह आश्चर्यकर्म तो आम लोगों के बीच में किया लगता है। परन्तु इससे संकेत मिल सकता है कि यह आश्चर्यकर्म एकांत में कहीं, बाद में हुआ होगा, शायद भीड़ के चले जाने के बाद। इसके अलावा मत्ती ने आश्चर्यकर्मों का एक संग्रह दिया है जिसका क्रम मरकुस और लूका से अलग है, इस कारण हमें मत्ती से कठोर कालक्रम का पालन किए जाने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

दूसरा, यीशु ने उससे कहा, ''**जाकर अपने आप को याजक को दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि लोगों के लिए गवाही हो**।'' त्वचा के रोगियों की जांच करने की जिम्मेदारी याजक की होती थी। इस आदमी को शुद्ध घोषित किए जाने के लिए याजक की आवश्यकता थी। रॉबर्ट एच. माउंस के अनुसार, ''याजक लोग जन स्वास्थ्य के पुरोहित सेवक'' थे।[2] व्यवस्था में स्पष्ट बताया गया था कि कोढ़ के शुद्ध होने की प्रामाणिकता कैसे पता चले और उसके लिए क्या भेंट दी जाए (लैव्यव्यवस्था 14:1-32)। शुद्ध हुए कोढ़ी के लिए उपयुक्त बलिदान चढ़ाने के लिए यरूशलेम के मन्दिर में जाना आवश्यक था।

''ताकि लोगों के लिए गवाही हो'' वाक्यांश के अर्थ में कुछ पहेली लगती है। इस वाक्यांश की अस्पष्टता से दो सवाल खड़े होते हैं। पहला यह कि ''लोगों'' किसके लिए कहा गया है? इसका अर्थ ''याजकों'' के लिए हो सकता है पर इस पर संदेह है, क्योंकि इस आयत में ''याजक'' शब्द एक वचन में है। ''लोगों'' सम्भवतया ''भीड़'' या अधिक सामान्य अर्थ में ''आम लोगों'' के लिए हो सकता है (8:1)। दूसरा, ''गवाही'' शब्द किसके लिए है? (1) शायद इसका अर्थ है कि यह चंगाई पाने वाला कोढ़ी उन्हें यीशु की गवाही देगा। (2) एक और सम्भावना यह है कि यह आदमी यीशु में उनके अविश्वास के कारण उनके विरुद्ध गवाह है। (3) यीशु का इस आदमी को उपयुक्त बलिदान देने के लिए भेजना गवाही हो सकता है कि

वह व्यवस्था के आज्ञापालन को बढ़ावा देता था (देखें 5:17-20)। परन्तु इन सुझावों में एक दिक्कत यह है कि इस शुद्ध हुए कोढ़ी को ''किसी से न कहना'' था कि यीशु ने उसे चंगाई दी है। (4) एक चौथा विकल्प यह है कि याजक की जांच और पर्याप्त बलिदान से ''भीड़'' या ''लोगों'' में गवाही होनी थी कि यह कोढ़ी सचमुच में शुद्ध हो गया है, और इस कारण वह फिर से समाज में प्रवेश करने को मुक्त है। यह व्याख्या सांस्कृतिक रूप में सबसे सही अर्थ देती है और इसे कई आधुनिक अनुवादकों द्वारा व्यापक रूप से समर्थन दिया जाता है (NEB; TEV; LB; NCV; CEV; JNT; NLT)।

इस घटना के समानांतर विवरणों में हमारे लिए संकेत है कि चंगाई पाने वाले कोढ़ी ने प्रभु की आज्ञा तोड़ी और अपने चंगा होने की खबर आस पास हर जगह फैला दी (मरकुस 1:45; लूका 5:15)। अन्ततः इससे यीशु की सेवकाई में बाधा पड़ी, जिस कारण उसे थोड़ी देर के लिए लोगों की आबादी वाले बड़े इलाकों में से दूर रहना पड़ा।

सूबेदार के सेवक की चंगाई (8:5-13)

[5]जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की, [6]''हे प्रभु, मेरा सेवक घर में लकवा रोग से बहुत दुखी पड़ा है।'' [7]उसने उससे कहा; ''मैं आकर उसे चंगा करूंगा।'' [8]सूबेदार ने उत्तर दिया, ''हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के तले आए, परन्तु केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। [9]क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे अधीन हैं। जब मैं एक से कहता हूं, 'जा!' तो वह जाता है; और दूसरे से 'आ!' तो वह आता है। और अपने दास से कहता हूं; 'यह कर!' तो वह करता है।'' [10]यह सुनकर यीशु को अचम्भा हुआ, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया। [11]और मैं तुम से कहता हूं, कि पूर्व और पश्चिम से बहुत से लोग आकर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे, [12]परन्तु राज्य के सन्तान बाहर अन्धकार में डाल दिए जाएंगे: वहां रोना और दांतों को पीसना होगा। [13]तब यीशु ने सूबेदार से कहा, ''जा जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिए हो।'' और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।

आयत 5. अगला आश्चर्यकर्म गलील की झील के तट पर एक सम्पन्न नगर **कफ़रनहूम** में हुआ। यह नगर पतरस का गृह नगर था (8:14) और यीशु के कार्यों का केन्द्र बन गया था (4:13; 9:1)। 11:23 में यीशु ने नगर पर श्राप दिया था क्योंकि लोगों ने उन आश्चर्यकर्मों के बावजूद जो उसने वहां किए थे उसमें विश्वास करने से इनकार कर दिया था। आज खण्डहरों की खुदाई में मिलने वाली चीज़ों में एक प्राचीन आराधनालय और कुछ घर शामिल हैं, जिनमें से एक परम्परा के अनुसार पतरस का घर बताया जाता है।[3]

यहां **यीशु** के पास आने वाला आदमी एक अन्यजाति अर्थात रोमी **सूबेदार** था। सूबेदार पेशेवर सिपाही होते थे, जो अन्य उच्च अधिकारियों के विपरीत, अपने लोगों के साथ लड़ाई को जाते थे। उन्हें ''रोमी सेना की रीढ़ की हड्डी'' कहा गया है। रोमी सेना में पच्चीस लश्कर (लगभग 1,50,000 पुरुष) होते थे, जो पूरे साम्राज्य में तैनात रहते थे। पूरी ताकत वाली रोमी

''पलटन'' में छह हज़ार सिपाही होते थे, जिन्हें छह-छह सौ पुरुषों वाली दस ''टुकड़ियों'' में बांटा जाता था। एक ''टुकड़ी'' को आगे छह ''सौ'' पुरुषों वाली कंपनियों में बांटा जाता था, जिन पर एक-एक सूबेदार होता था। यह लीडर अनुशासन, भर्ती और आदेशों का पालन करवाने के लिए ज़िम्मेदार होता था।

कफ़रनहूम में इस विशेष सूबेदार का होना उपयुक्त है। डेविड हिल ने बताया है:

> गलील और पिरिया के चौथाई के हाकिम हेरोदेस अन्तिपास को टुकड़ियां लगाने का अधिकार था, जिन्हें वह अपने इलाके से बाहर से भर्ती करता था। कफ़रनहूम एक छावनी नगर था और इसमें एक महत्वपूर्ण सीमा शुल्क की चौकी और एक सैनिक अधिकारी (तुलना यूहन्ना 4.46) का होना स्वाभाविक रूप से वहां अवश्य था।[5]

रोमी सूबेदारों से उच्च नैतिकताओं और भद्र स्वभाव वाले पुरुष होने की अपेक्षा की जाती है, और आमतौर पर वे ऐसे ही होते थे। नये नियम में वर्णित हर सूबेदार इस विशेषता से मेल खाता है (27:54; प्रेरितों 10:1, 2, 22; 22:25, 26; 27:43)। लूका 7:3-5 में ऐसा लगता है कि इस वचन पाठ वाला आदमी परमेश्वर का भय मानने वाले कुरनेलियुस जैसे अन्यजातियों में से एक था (प्रेरितों 10:2, 22)। इस विशेष सूबेदार के स्वभाव का संकेत यह है कि अधिकतर रोमी सिपाहियों के बीच यहूदियों में उसका अच्छा नाम था।

लूका ने लिखा कि इस सूबेदार ने यहूदी पुरनियों के द्वारा मसीह के पास विनती की। उन्होंने यीशु से कहा, ''वह इस योग्य है, कि तू उसके लिए यह करे। क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे आराधनालय को बनाया है'' (लूका 7:4, 5)। मत्ती और लूका के बीच अन्तर के सम्बन्ध में, लियोन मौरिस ने टिप्पणी की है, ''व्यक्ति जो कुछ बिचौलियों के द्वारा करता है वह उसी के द्वारा किया माना जा सकता है। सो मत्ती केवल यीशु के साथ सूबेदार की बातचीत की झलक देता है, जबकि लूका और विस्तार से घटनाओं के वास्तविक क्रम को बताता है।''[6]

आयत 6. आयतों 6 और 8 में सूबेदार ने यीशु को **प्रभु** (*kurios*) कहकर सम्बोधित किया। इस शब्द के विनम्र सम्बोधन (''महोदय'') से ईश्वरीय शीर्षक (''परमेश्वर'') के कई व्यापक अर्थ हो सकते हैं। यहां इसका इस्तेमाल केवल शिष्टाचार से कहीं बढ़कर है; इसे उसके प्रभु होने को मानने के लिए कहा जा सकता है। इससे आयतों 8 और 9 में यीशु के लिए सूबेदार की टिप्पणियों से इसका संकेत मिल सकता है।

सूबेदार का स्वभाव अपने **सेवक** के लिए उसकी चिन्ता से और अधिक दिखाया गया है। मत्ती के विवरण में इस्तेमाल शब्द (*pais*) वह है जिसका अर्थ पुत्र या दास का संकेत देते हुए ''बालक'' हो सकता है। परन्तु लूका 7:2 ''दास'' के लिए यूनानी शब्द (*doulos*) का इस्तेमाल करता है।[7] यह तथ्य कि इस आदमी को एक गुलाम की इतनी परवाह थी जिसे रोमियों द्वारा केवल अपनी सम्पत्ति के रूप में देखा जाता होगा, उसके भले मन को साबित करता था।

सूबेदार का सेवक **घर में लकवा रोग से बहुत दुखी पड़ा** था। लकवा की किस्म और कारण नहीं दिए गए। यूनानी क्रिया शब्द (*basanizō*) जिसका अनुवाद ''दुखी पड़ा'' है का इस्तेमाल बड़ी निराशा को दिखाते हुए प्रतीकात्मक अर्थ में हुई है। NLT में इस वाक्यांश को

''पीड़ा से परेशान'' किया गया है। स्वामी की यीशु से विनती ''आकर मेरे दास को चंगा कर'' थी (लूका 7:3)।

आयत 7. यीशु ने उससे कहा, ''मैं आकर उसे चंगा करूंगा।'' यूनानी धर्मशास्त्र में, व्यक्तिवाचक सर्वनाम ''मैं'' (*egō*) पर ज़ोर दिया गया है। NJB में यही विशेषता देखी जा सकती है: ''*मैं स्वयं* आकर उसे चंगा करूंगा।'' कुछ विद्वान यीशु की बात की व्याख्या एक प्रश्न के रूप में करते हैं: ''क्या *मैं* जाकर उसे चंगा करूं?'' अन्य शब्दों में, ''क्या *मैं* [एक यहूदी] [एक अन्यजाति के घर में] जाकर उसे चंगा करूं?'' डग्लस आर. ए. हेयर ने 15:21-28 में कनानी स्त्री की बेटी, जो एक अन्यजाति थी, को चंगाई देने की यीशु की झिझक पर आधारित इस विचार का समर्थन किया।[8] माउंस ने यह कहते हुए इस विचार का विरोध किया, ''यीशु ने अभी बढ़कर एक कोढ़ी को छुआ था; उसने किसी अन्यजाति के घर में जाने से झिझकना नहीं था।''[9]

आयत 8. लूका का विवरण कहता है कि यीशु सूबेदार के घर के निकट पहुंच रहा था जब उसे उस आदमी के कुछ दोस्त मिल गए, जिन्होंने उसका संदेश दिया (लूका 7:6, 7)। **सूबेदार ने उत्तर दिया, ''हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के तले आए।''** इस उत्तर से सूबेदार की विनम्रता का संकेत मिला, क्योंकि वह अपने आपको इस योग्य नहीं समझता था कि यीशु अतिथि बनकर उसके घर आए। वह आदमी परमेश्वर का भय मानने वाला था और स्थानीय आराधनालय को बनवाने के लिए उसने धन दिया था, जिस कारण इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह अच्छी तरह से जानता था कि यहूदियों को किसी अन्यजाति के घर में जाने की मनाही है (देखें यूहन्ना 18:28; प्रेरितों 10:28)। यह बाइबल का नियम न होकर एक परम्परागत नियम मिशनाह में यह घोषणा करते हुए कि ''अन्यजातियों के निवास स्थान अशुद्ध हैं''[10] इस पाबन्दी को बनाए रखा था। सूबेदार को मालूम था कि यदि उसने यीशु को अपने घर बुलाया तो वह भी यीशु से यहूदियों को ठोकर खिलाने या किसी बीमार को नज़रअन्दाज़ करने के बीच निर्णय लेने को कह रहा होगा।

बुलाने के बजाय सूबेदार ने यीशु से केवल सेवक को चंगा करने को कहा: ''**केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।**'' बेशक वह अपने आपको यीशु को अपने घर बुलाने के अयोग्य मानता था, पर उसे उसमें इतना विश्वास अवश्य था कि वह यह माने कि यीशु सेवक को बिना छुए, दूर से चंगाई दे सकता था।

आयत 9. चंगाई देने की यीशु की क्षमता में सूबेदार के विश्वास की और गवाही मिलती है। वह **अधिकार** की समझ रखता था। वह अधिकार के **अधीन** भी था और उस अधिकार *में* भी था। दूसरी ओर उसे दस्ते और पलटन और अन्त में सम्राट को जो उसके ऊपर थे जवाब देना था। दूसरी ओर जब वह **सिपाहियों** से कुछ करने को कहता तो उनसे बिना शक आज्ञा मानने की उम्मीद की जाती थी। आज्ञा न मानने को सम्राट के प्रति विद्रोह और साम्राज्य का अपमान माना जाना था। अपने सिपाही या अपने **दास** को सूबेदार आदेश ही दिया करता था। (''**'जा!' ... 'आ!' ... 'यह कर!'**'') और वे मानते थे। हेयर ने सुझाव दिया, ''इसी प्रकार, उसके कहने का अभिप्राय है कि यीशु को परमेश्वर की ओर से अधिकार मिला है, यह अधिकार जो उसे उसकी बात मनवाने के लिए और अदृश्य आत्माओं (स्वर्गदूतों) को आज्ञा देने की अनुमति देता है।''[11]

आयत 10. यीशु ... को सूबेदार की बात पर **अचम्भा हुआ**। ''अचम्भा'' क्रिया

(*thaumazō*) का इस्तेमाल आम तौर पर यीशु की शिक्षा और आश्चर्यकर्मों पर भीड़ के आश्चर्य के लिए किया गया है। परन्तु यीशु के अपने आश्चर्य के लिए यह बहुत कम इस्तेमाल हुआ है, जो उसके मनुष्य होने की ओर संकेत करता है। इस वचन पाठ और इसके समानांतर वह सूबेदार के विश्वास पर ''अचम्भित'' हुआ (देखें लूका 7:9)। मरकुस 6:6 में जब नासरत के अपने गृहनगर में यीशु को ठुकरा दिया गया तो ''उस ने उन के अविश्वास पर आश्चर्य किया।''

यीशु ने यहूदियों को जो उसके साथ थे, बताया, **''मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।''** यीशु के लोगों को ''बड़ा विश्वास'' होने की बात कहते केवल दो बार बताया गया है, जिसमें एक तो सूबेदार के लिए है और दूसरा 15:21–28 में कनानी स्त्री के लिए। दोनों ही अन्यजाति थे! अन्य घटनाओं के उलट, इन दोनों घटनाओं में उसने दूर से चंगाई दी। यीशु आम तौर पर बीमारों से सीधे बात करके या उन्हें छूकर चंगाई देता था। मत्ती में ''विश्वास'' (*pistis*) शब्द यहां पहली बार देखा है (8:10; 9:2, 22, 29; 15:28; 17:20; 21:21; 23:23)। केवल थोड़ी देर बार यीशु ने अपने चलों को ''अल्प विश्वास'' (8:26) के लिए डांटा था।

आयत 11. उन बहुत से लोगों के विषय में यीशु की भविष्यवाणी, जिन्होंने **पूर्व और पश्चिम से** आना था, पृथ्वी के लोगों के लिए कहा गया था। लूका ने ''और उत्तर और दक्खिन'' जोड़ा है (लूका 13:29)। यह दृष्टिकोण इस्राएल की सीमाओं के भीतर रहने वाले व्यक्ति से लिया गया है। पुराने नियम में दासता से यहूदियों के देश निकाले की वापसी के लिए ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल किया गया है (भजन संहिता 107:2, 3; यशायाह 43:5, 6; 49:8–13)। परन्तु यहां इस्तेमाल हुई भाषा मुख्यतया अन्यजातियों के लिए है।

यीशु ने कहा कि बहुत से लोग इकट्ठा होंगे और **बैठेंगे**। लोगों के लिए इकट्ठे भोज करने के समय कोच या तकीए पर टेक लगाकर, रेत से अपने पांव दूर फैलाना आम बात थी। वे बाईं कोहनी की टेक लगाकर दायें हाथ से खाना खाते थे। मेज़ की संगति के सम्बन्ध एस. थॉट बारची ने लिखा है, ''लोगों के लिए खाना खाने के कई अवसर होते थे। किसी दूसरे व्यक्ति के साथ भोजन खाने के लिए मेज़ पर स्वागत किया जाना मित्रता, निकटता और एकता के समृद्ध संकेत का समारोह बन गया था।''[12] ऐसे अवसरों में बड़ा आनन्द मिलता था। यहां रूपक यशायाह 25:6–9 की मसीहा की भविष्यावाणी से लिया गया है, जहां परमेश्वर ने सब जातियों के लोगों के लिए एक बड़ी जेवनार तैयार की।

स्वर्ग के राज्य में अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ संगति की जेवनार को हम कैसे समझें? दो सम्भावनाएं बताई जाती हैं। पहली यह कि यह अन्यजातियों के परमेश्वर के राज्य में, जो कलीसिया है, मिलाए जाने की बात हो सकती है। शायद यीशु ने सूबेदार के काम में उद्धार की परमेश्वर की बड़ी योजना को देखा जो यहूदियों और अन्यजातियों तक एक ही प्रकार से पहुंचनी थी (देखें प्रेरितों 10)। यदि ऐसा है तो ''स्वर्ग के राज्य में'' वाक्यांश उस कलीसिया के लिए जिसे स्थापित करने के लिए यीशु आया था एक और हवाला है।[13]

एक और सम्भावना है कि यह जेवनार अन्यजातियों के स्वर्गीय पिता के अनन्त राज्य में पुरखाओं के साथ इकट्ठा होने की बात है।[14] इस दूसरे विचार को आयत 12 में न्याय के हवाले से समर्थन मिलता है, जहां से ''राज्य की संतान'' को बाहर ''अंधकार में'' डाल दिया जाना था।

दोनों विचार आपस में बहुत नज़दीकी के हैं, क्योंकि दोनों अनन्त जीवन की ओर बढ़ते हैं।

मसीह जब दोबारा आएगा तो वह राज्य (कलीसिया) जिसे उसने बनाया है पिता का अनन्त राज्य बन जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:24; 2 पतरस 1:11; प्रकाशितवाक्य 11:15)। पहला विचार इस संसार में व्यक्ति के परमेश्वर के राज्य का भाग बनने पर उस संगति में आने की ओर मिलता है, जो आने वाले संसार में एक बड़ी संगति में बदल जाएगी। दूसरा विचार लगभग पूरी तरह से उस आशीष पर ध्यान दिलाता है जो यहूदियों और अन्यजातियों को आने वाले संसार में मिलनी थी।

आयत 12. अन्यजातियों को बेशक स्वर्गीय राज्य में मिलाया जाना था, परन्तु उनमें से अधिकतर को जो अपने आपको राज्य के पक्के निवासी समझते थे, इसमें से निकाल दिया जाना था। ये **राज्य के सन्तान** यहूदी लोग ही थे, जिन्होंने यीशु को मसीहा मानने से इनकार कर दिया था। वे अब्राहम की सन्तान थे, जिसे परमेश्वर ने पहले प्रतिज्ञाएं दी थीं (उत्पत्ति 12:1–3), परन्तु उन्होंने अब्राहम के विश्वास का अनुसरण नहीं किया (3:8, 9 पर टिप्पणियां देखें)। बाद में यीशु ने कुछ यहूदियों को बताया, ''परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा'' (21:43)।

यीशु ने कहा कि विश्वास न करने वाले यहूदी **''बाहर अन्धकार में डाल दिए जाएंगे: वहां रोना और दांतों का पीसना होगा।''** यह विवरण नये नियम में नरक के अन्य हवालों के साथ मेल खाता है (लूका 13:28; 2 पतरस 2:17; यहूदा 13)। जैक पी. लुईस ने लिखा है,

> *बाहर अन्धकार* दुष्ट लोगों के कष्ट के विवरणात्मक वाक्यांश के रूप में मत्ती के लिए विलक्षण है (22:13; 25:30), परन्तु छदम लेखों में इस अवधारणा का आभास दिया गया है। ... रोना और दातों का पीसना, मत्ती में छह बार मिलता है (8:12; 13:42, 50; 22:13; 24:51; 25:30; तुलना लूका 13:28), जिसे धर्मियों की समृद्धि के लिए दुष्ट व्यक्ति की प्रतिक्रिया के वर्णन के लिए भजन संहिता 112:10 में पहले दिया गया था।[15]

अब्राहम की शारीरिक सन्तान होना राज्य में किसी को स्थान दिलाने की तरह ही नहीं था, न ही यह उसकी आत्मा की हानि को रोक सकता था, परन्तु व्यक्ति उन सभी लाभों को पा सकता है जो उसे मसीहा के रूप में यीशु को पहचानने के लिए तैयार करते हैं और फिर भी अपने सुनहरी अवसर को जाने देते हैं, जबकि इस आशीष से वंचित व्यक्ति उठकर राज्य में प्रवेश करता है।

आयत 13. जो लोग उसके पीछे चल रहे थे उनसे बात करने के बाद, यीशु ने सूबेदार के दूतों की ओर मुंह करके उन्हें यह संदेश दिया: **''जा जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिए हो।''** चंगाई की हर घटना में यीशु में विश्वास होना आवश्यक नहीं था, चाहे यह चंगाई पाने वाले की ओर से हो या उससे सहायता मांगने वालों का, परन्तु सूबेदार ने दूर से ही अपने सेवक को चंगा करने की यीशु की सामर्थ में पूरा विश्वास जताया था, इस कारण उसके विश्वास को आदर दिया गया: **उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया**। यूनानी धर्मशास्त्र के मूल में है कि वह ''उसी घड़ी'' चंगा हो गया (देखें यूहन्ना 4:53)। लूका ने जोड़ा है, ''और भेजे हुए लोगों ने घर लौटकर, उस दास को चंगा पाया'' (लूका 7:10)।

पतरस की सास को चंगा करना (8:14, 15)

[14]यीशु जब पतरस के घर आया तो उसने उसकी सास को ज्वर में पड़ी देखा। [15]उसने उसका हाथ छुआ और उसका ज्वर उतर गया, और वह उठकर उसकी सेवा करने लगी।

आयत 14. यह चंगाई **पतरस के घर** में हुई। गलील की झील पर मछलियां पकड़ने वाले शमौन पतरस को **यीशु** ने चेला बनने के लिए बुलाया और बाद में उसे प्रेरित ठहरा दिया (4:18-20 पर टिप्पणियां देखें; 10:1, 2)। वह और उसका भाई अन्द्रियास मूलतया बैतसैदा के रहने वाले थे (यूहन्ना 1:44), परन्तु वे कफ़रनहूम में रहने के लिए आए थे। मरकुस में निवास ''शमौन और अन्द्रियास के घर'' में बताया गया है (मरकुस 1:29)। आम तौर पर एक ही घर में कई पीढ़ियां, यानी संयुक्त परिवार रहा करता था। अन्द्रियास (और उसकी पत्नी?) पतरस और उसकी पत्नी के साथ उसी घर में रहते होंगे (देखें 1 कुरिन्थियों 9:5)। बहुत सम्भावना है कि पतरस की **सास** उनके साथ ही रहती थी। इसके अलावा लगता है कि यीशु ने नासरत से जाने के बाद पतरस के घर को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बना लिया था (4:13; मरकुस 1:35; 2:1)।

जब यीशु घर में आया, तो पतरस की सास **ज्वर में पड़ी** थी। मरकुस और लूका दोनों ने संकेत दिया कि अनाम लोग जिन्हें ''उन्होंने'' कहा गया है यीशु को उस स्त्री की बीमारी के बारे में बताया। परन्तु ''उन्होंने'' पतरस, अन्द्रियास, और याकूब और यूहन्ना के लिए हो सकता है (मरकुस 1:29, 30)। स्त्री ''तेज'' बुखार से परेशान थी (लूका 4:38)। वचन में उसकी बीमारी नहीं बताई गई कि क्या थी, जबकि उस युग में ज्वर को एक बीमारी ही माना जाता होगा न कि किसी बात का कोई लक्षण (देखें यूहन्ना 4:52; प्रेरितों 28:8)। उसका न उठ पाना और नये मेहमानों का स्वागत न कर पाना इस बात का संकेत दे सकता है कि वह गम्भीर रूप में बीमार थी।

आयत 15. यीशु ने बुखार से पीड़ित स्त्री का **हाथ छुआ**-ऐसा कार्य जिसकी यहूदी परम्परा के अनुसार मनाही थी[16]-और **ज्वर उतर गया**। तब **वह उठकर उसकी सेवा करने लगी**। बेशक वह दूसरों की सेवा कर रही थी पर उसने यीशु से चंगाई पाने के बाद उसका विशेष ध्यान रखा होगा।

यीशु की चंगाई की समीक्षा (8:16, 17)

[16]जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया, [17]ताकि जो वचन यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो: ''उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।''

आयत 16. कफ़रनहूम में जाने पर यीशु सब्त के दिन ''तुरन्त'' आराधनालय गया (मरकुस 1:21; देखें लूका 4:31, 33)। वहां उसे दुष्टात्माओं से पीड़ित एक आदमी मिला। बहुवचन का

संकेत सर्वनामों से मिलता है। यीशु ने दुष्टात्माओं को यह कहते हुए डांट लगाई ''चुप रह; और उस में से निकल जा'' (मरकुस 1:25)। इस चंगाई के होने से ''उसका नाम तुरन्त गलील के आस-पास के सारे देश में हर जगह फैल गया'' (मरकुस 1:28; देखें लूका 4:37)।

बहुत से यहूदी सब्त का दिन खत्म होने से पहले यीशु के पास अपने बीमारों को लाने से डरते थे, बेशक कुछ बीमारों को लेकर आना आवश्यक था और कुछ यहूदी अगुओं ने यह घोषणा की होगी कि सब्त के दिन चंगाई के लिए अपने प्रियजनों को ले जाना व्यवस्था के विरुद्ध होगा (देखें यूहन्ना 5:10)।[17] इसलिए लोग यीशु के पास आने के लिए सूर्य ढलने की राह देखते रहे (मरकुस 1:32; लूका 4:40)। यहूदी लोग दिन सूर्यास्त से सूर्यास्त तक को मानते थे (उत्पत्ति 1:5, 8, 13, 19, 23, 31)। **जब संध्या हुई,** तो सब्त बीत गया और सप्ताह का पहला दिन आरम्भ हो चुका था।

जैसा पहले कई बार उसने किया था और बाद में फिर करना था, यीशु ने बीमारों को बिना इस बात का ध्यान किए कि उनके विश्वास का स्तर क्या है या उनकी बीमारी क्या है उन्हें **चंगा किया**। परन्तु मत्ती के विवरण में **जिनमें दुष्टात्माएं थीं** उन्हें **रोगियों** से अलग बताया (देखें 4:23, 24)। यीशु की सामर्थ का इस तथ्य से पता चलता है कि **उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया**। इसके विपरीत प्राचीन ओझा बुरी आत्माओं को निकालने के लिए झाड़फूंक, बड़ी आत्माओं को बुलाकर निकालने और मछलियों के अंगों या दुर्गन्ध वाली जड़ों को जलाकर गन्दी बदबू से कोशिश करते थे।[18] ग्राहम एच. ट्वेल्फ्ट्री के अनुसार, कई और चीज़ों का भी इस्तेमाल किया जाता था:

> बेबिलोन के टालमुड में ताबीज, खजूर के पेड़ के कांटे, लकड़ी की सिप्पियां, राख, कीलें, ज़ीरा, कुत्ते के बाल और धागे का इस्तेमाल किया जाता था; लुसियन लोहे के कड़ों के इस्तेमाल की बात बताता है और जादू के पेपिरस ओझों द्वारा झाड़फूंक, जैतून की डालियां, मरूआ और विशेष आवाज़ों का इस्तेमाल बताता है।[19]

आयत 17. मत्ती ने चंगाई की यीशु की सेवकाई को **यशायाह भविष्यवक्ता** की बात के **पूरा** होने के रूप में देखा कि ''**उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया**।'' उसका उद्धरण जो सहदर्शी समानांतर है, यशायाह 53:4 से लिया गया है, जिसका अनुवाद NASB में इस प्रकार है: ''निश्चय ही हमारे दुख उसने उठा लिए, और हमारे क्लेश अपने ऊपर ले लिए।'' एल्बर्ट बार्नस ने तर्क दिया है कि ''यशायाह ने अनुवादित शब्द *दुखों* और मत्ती में *दुर्बलताओं* का अर्थ इब्रानी और यूनानी भाषा में सही ढंग से *शरीर के रोग* है। ... उन दुखों को उठाने का अर्थ स्पष्ट तौर से उन्हें *हटाना* या उन्हें मिटाना है।''[20] लुईस ने लिखा है, ''चंगाइयां देने में यीशु 'यहोवा का सेवक' की अपनी भूमिका निभा रहा था जिसका वर्णन यशायाह ने किया था।''[21]

यशायाह का उद्धरण सम्भवतया क्रूस के ऊपर अन्ततः पाप पर यीशु की विजय की ओर ध्यान दिलाता है। यशायाह 53 का संदर्भ मसीहा के प्रायश्चित की भविष्यवाणी ही है। डी. ए. कार्सन ने लिखा है, ''मत्ती इस बात को समझता है कि चंगाई के लिए यीशु के आश्चर्यकर्म केवल ताकत दिखाने के लिए नहीं, बल्कि वे यीशु की प्रायश्चित की मृत्यु के कार्य के रूप में थे

जो अभी होनी थी।''[22] मौरिस ने लिखा, ''निश्चित रूप से इसमें यह विचार है कि बीमारी का अन्तिम उत्तर क्रूस में मिलता है।''[23] जॉन फिलिप्स ने महत्वपूर्ण मूल्यांकन किया:

> मसीह के क्रूस पर बीमारी के कारण से निपटने की बात करते हुए हमें चौकस रहने की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रायश्चित में *हमारे लिए* तुरन्त शारीरिक चंगाई पक्की हो। जो लोग ऐसा सिखाते हैं वे गलत हैं। वे यह कहकर कि चंगाई आज भी होती है और जिन्हें चंगाई नहीं मिलती उनमें इसे पाने के लिए आवश्यक विश्वास की कमी है वे भी बहुत हद तक मानसिक कष्ट देने के ज़िम्मेदार हैं। मृत्यु से बचाव हमारा पक्का अधिकार नहीं है, न ही शारीरिक चंगाई। अन्त में बीमारी से आज़ादी और मृत्यु के ऊपर विजय [प्रकाशितवाक्य 21:4]-क्रूस के द्वारा ही हमें मिलेगी; परन्तु वह तब तक नहीं होगी जब तक जैसा पौलुस ने कहा ''हमारी देह का छुटकारा'' नहीं होगा (रोमियों 8:22-23)।[24]

संसार में मसीह का मिशन लोगों की *आत्मिक* आवश्यकताओं को पूरा करना है; परन्तु उसके आश्चर्यकर्म, विशेषकर चंगाइयां, पाप से चंगाई की हमारी बड़ी आवश्यकता को और हमें सम्पूर्ण बनाने के लिए उसकी सामर्थ को दिखाते हैं। ''वे हमें परमेश्वर के मन का अद्भुत प्रकाशन देते हैं।''[25] और हमें उस अद्वितीय प्रेम का स्मरण कराते हैं जो अपने लोगों के लिए उसे है।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

आश्चर्यकर्म (अध्याय 8)

''आश्चर्यकर्म प्रकृति के नियम व्याख्या न किए योग्य घटना'' है ''और इसे मूल में अलौकिक या परमेश्वर का काम माना जाता है।''[26] सी. एस. लुईस ने ''आश्चर्यकर्म'' को ''अलौकिक शक्ति द्वारा प्रकृति के साथ हस्तक्षेप'' बताया है।[27] और सम्पूर्ण परिभाषा द *वेस्टमिंस्टर डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल* में मिलती है:

> अति संकीर्ण बाइबली अर्थ में आश्चर्यकर्म बाहरी संसार की घटनाएं हैं, जो परमेश्वर की सीधी सामर्थ से होती हैं और पुष्टि के लिए होती है। वे सम्भव हैं क्योंकि परमेश्वर सब बातों को सम्भालता, नियन्त्रित करता और चलाता है, और व्यक्तिगत और सर्वशक्तिमान है।[28]

बाइबली विवरणों में, परमेश्वर ने कई बार प्राकृतिक नियमों को एक ओर करके, अपनी ईश्वरीय सामर्थ से, उन पर बाहरी काम किए। बाइबल के आश्चर्यकर्म बन्द हो गए हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 13:8-10), इस कारण आज ऐसे आश्चर्यकर्म करने का दावा करने वाले लोग धोखा देने वाले और स्वयं धोखा खाने वाले हैं।

आश्चर्यकर्म प्रेरितों और अन्य लोगों को उनके द्वारा दिए जाने वाले संदेश की पुष्टि करने के उद्देश्य से पहली सदी में दिए गए थे (मरकुस 16:17-20; इब्रानियों 2:2-4)। आज कुछ लोग

यह ज़ोर देते हैं कि लोगों को यकीन दिलाने के लिए कि बाइबल परमेश्वर का वचन है आज भी आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता है। यूहन्ना ने लिखा कि बाइबल में लिखे गए आश्चर्यकर्म उद्धार दिलाने वाला विश्वास दिलाने के लिए काफ़ी हैं (यूहन्ना 20:30, 31)। विश्वास परमेश्वर का वचन को सुनने से आता है (रोमियों 10:17), न कि आश्चर्यकर्मों को देखने से। बहुत से लोग, जिन्होंने मसीह के आश्यर्चकर्मों को देखा था, उन्होंने विश्वास नहीं किया (12:22-24)। परमेश्वर आज भी काम करता है, पर वह इसे अपने बनाए प्राकृतिक नियम के द्वारा ईश्वरीय उपाय से करता है।

कोढ़ (8:1-4)

बहुत सम्भावना है कि बाइबल के समयों में बहुत से लोग कोढ़ के शीर्षक के अधीन आते थे। कोढ़ लगने वाली हर बात आवश्यक नहीं कि वास्तव में वह कोढ़ हो। याजक द्वारा किसी का रोग निदान किए जाने की प्रक्रिया लैव्यव्यवस्था 14:1-32 में दी गई थी। उस समय इस बीमारी का कोई इलाज नहीं था, इस कारण यदि कोई इससे शुद्ध होता था तो वह परमेश्वर के अनुग्रह से ही था (2 राजाओं 5:1-19; लूका 4:27)। यदि कोई शुद्ध हो जाता, तो उस चंगाई पाने वाले व्यक्ति के समाज में फिर से आने की ठहराई हुई एक प्रक्रिया थी। चंगाई बहुत कम होती थी (गिनती 12:13-15; 2 राजाओं 5:9-14)। कई बार कोढ़ परमेश्वर के सीधे कार्य करने के कारण भी आ जाता (गिनती 12:9-15)।

व्यवस्था के अधीन कोढ़ियों की दशा अनुग्रह के अधीन की दशा जैसी थी। पाप मनुष्य को परमेश्वर से और उसके लोगों से दूर करता है (यशायाह 59:1, 2), बिल्कुल वैसे ही जैसे कोढ़ व्यक्ति को समाज से दूर करता था। पाप के कारण अलग होने वाला व्यक्ति अस्थाई तौर पर या पक्के तौर पर अलग हो सकता है (2 थिस्सलुनीकियों 1:6-9)। हो सकता है कि लोगों को समझ न हो कि इस अलगाव का क्या अर्थ है, पर न्याय के समय उन्हें पता चल जाएगा (25:41, 46)। पाप की बीमारी का इलाज है। आत्मा पर मसीह का लहू लगाना है (इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:20; प्रकाशितवाक्य 1:5)।

चकित करने वाला (8:5-13)

इस कहानी में रोमी सूबेदार द्वारा कई भले काम दिखाए गए हैं। (1) अधिकार और प्रभाव वाले व्यक्ति के रूप में, निश्चय ही वह कफ़रनहूम के कई लोगों में आदरणीय माना जाता होगा। (2) प्रभावशाली व्यक्ति होने के बावजूद, वह विनम्र था। उसने यीशु से कहा, ''हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के तले आए'' (8:8)। (3) सूबेदार ऐसा व्यक्ति था जिसे यहूदी लोग पसन्द करते थे (लूका 7:5)। मूर्तिपूजा करने वालों के बीच पला बढ़ा होने के बावजूद स्पष्ट लगता है कि वह ''परमेश्वर का भय मानने वाला'' बन गया था। (4) वह एक उदार व्यक्ति ही था। कफ़रनहूम के यहूदी पुरनियों ने उनके स्थानीय आराधनालय को बनाने के लिए सूबेदार की प्रशंसा की (लूका 7:5)। कम से कम इसका अर्थ यह होगा कि उसने उस काम में पैसा दिया था। (5) इन सभी भले कामों से बढ़कर, वह बड़ा विश्वास रखने वाला आदमी था। उसने यीशु से दूर से ही उसके सेवक को चंगा करने के लिए ''केवल मुख से कह'' देने की

अपील की (8:8)। यीशु को सूबेदार पर ''अचम्भा'' हुआ और उसने कहा, ''मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया'' (8:10)। आज यीशु ने हमारे विश्वास के बारे में कुछ कहना हो तो वह क्या कहेगा ?

डेविड स्टिवर्ट

सेवा करने के लिए बचाए गए (8:14, 15)

पतरस की सास चंगाई पाकर तुरन्त यीशु और उस घर में इकट्ठा हुए दूसरे लोगों की सेवा में लग गई (देखें लूका 4:39)। प्रभु के स्पर्श से उसके जीवन में बदलाव आ गया था। मसीह द्वारा हमारी आत्मिक चंगाई से हमें ऐसे ही अच्छे काम करने आवश्यक हैं; हमें सेवा के लिए बचाया गया है। यह ज़ोर देने के बाद कि हमारा उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से हुआ है, पौलुस ने निष्कर्ष निकाला, ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए, जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया'' (इफिसियों 2:10)।

डेविड स्टिवर्ट

बीमारी की जड़ (8:16, 17)

''यहोवा का सेवक'' के रूप में यीशु की सेवकाई का भाग चाहे बीमार लोगों को चंगाई देना था (यशायाह 53:4), पर संसार में उसके आने का उद्देश्य यह नहीं था। हैग्नर ने समझाया है, ''बीमारी वह वास्तविक शत्रु नहीं है जिस पर जय पानी आवश्यक है; शत्रु तो पाप है, क्योंकि पाप के द्वारा पतित हुआ संसार अन्त में इस युग के दुख और बीमारी के पीछे है।''[29] क्रूस पर मर कर यीशु ने पापों की क्षमा के लिए अपना लहू बहा दिया (26:28)। हम में से जो लोग बपतिस्मे में उद्धार दिलाने वाले इस लहू के सम्पर्क में आते हैं (प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3, 4; प्रकाशितवाक्य 7:14) और इससे शुद्ध होते रहते हैं (1 यूहन्ना 1:9) वे अन्ततः अविनाशी शरीर पाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:50–57; 1 यूहन्ना 3:2)। हम स्वर्ग में परमेश्वर के साथ अनन्तकाल तक रहेंगे, जहां न मृत्यु होगी, न शोक, न चिल्लाना और न पीड़ा (प्रकाशितवाक्य 21:4)।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]*लैवितक्स रब्बाह* 16.6, 7; 17.3; *नम्बर्स रब्बाह* 7.5; 16:6; *यूट्रॉनोमी रब्बाह* 6.8. [2]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 73. [3]*आर्कियोलॉजी एंड द बाइबल: द बेस्ट ऑफ़ बार,* अंक 2, *आर्कियोलॉजी इन द वर्ल्ड ऑफ हैरड, जीज़स एंड पॉल,* संपा.हरशेल शैंक्स एंड डैन पी. कोल (वाशिंगटन, डी. सी.: बिब्लिकल आर्कियोलॉजी सोसायटी, 1990), 188–99, 200–7 में जेम्स एफ़. स्ट्रेंज एंड हरशे शैंक्स, ''हैज़ द हाउस वेयर जीज़स स्टेड इन केपरनाऊम बीन फाउंड'' और ''सिनागोग वेयर जीज़स प्रीचड फाउंड ऐट केपरनाऊम।'' [4]टेसिटुस *एनल्स* 4.5. देखें एवरेट फर्ग्यूसन, *बैकग्राउंड्स ऑफ़ अर्ली क्रिश्चियेनिटी,* 2रा संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1993), 46–48. [5]डेविड हिल, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 158. [6]लियोन मौरिस, *लूकः एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 151. [7]यूहन्ना रचित सुसमाचार में ''राजा

के अधिकारी'' की ऐसी ही है, जो कफ़रनहूम में घटी (यूहन्ना 4:46-54)। परन्तु वहां इस्तेमाल शब्द ''दास'' नहीं बल्कि ''पुत्र'' (*huios*) है। [8]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रेटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 90. [9]माउंस, 74. [10]मिशनाह *ओहोलोठ* 18.7.

[11]हेयर, 91. [12]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 796 में एस. स्कॉट बारची, ''टेवल फैलोशिप।'' [13]एच. लियो बोल्स, *ए क्मैंट्री ऑन द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 191. [14]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 195. [15]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 123. [16]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 209. [17]सब्त के दिन परिश्रम करने के विरुद्ध रब्बियों ने उनतालीस पाबन्दियां बनाईं थीं। इनमें से अन्तिम पाबन्दी ''एक स्थान से दूसरे स्थान किसी चीज़ को ले जाने वाले'' के विरुद्ध थी (मिशनाह *शब्बथ* 7.2)। परन्तु एक रब्बी ने कहा कि किसी दूसरे व्यक्ति को उसके बिस्तर पर ले जाने वाले व्यक्ति को छोड़कर। (मिशनाह *शब्बथ* 10.5.) तौभी ऐसा लगता है कि दूसरों का विचार इसके उलट था। [18]*टैस्टामैंट ऑफ़ सॉलोमन* 2.4; 5.5, 13; 8.5-11; टोबीत 6:7, 8, 16-18; 8:2, 3; जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 8.2.5. [19]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 167 में ग्राहम एच. ट्वेल्फ्ट्री, ''डीमन, डेविल, सैटन।'' [20]एल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: मैथ्यू एंड मार्क,* संपा. रॉबर्ट फ्रयू (फिलाडेल्फिया: पृष्ठ नहीं, 1832; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1974), 88. NRSV में यशायाह 53:4 और मत्ती 8:17 में तुलना करें।

[21]लुईस, 124. [22]डी. एस. कार्सन, *वेन जीज़स कन्फ्रंट्स द वर्ल्ड: ऐन एक्सपोज़िशन ऑफ़ मैथ्यू 8-10* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1987), 33. [23]मौरिस, *मैथ्यू,* 198. [24]जॉन फिलिप्स, *एक्सपलोरिंग द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू: ऐन एक्पोज़िटरी क्मैंट्री,* द जॉन फिलिप्स कमैंट्री सीरीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1999), 151. [25]विलियम एम. टेयलर, द *मिरेक्ल्स ऑफ़ अवर सेवियर* (न्यू यार्क: डबलडे, डोरन एंड कं., 1928), 26. [26]द *अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* 4 संस्क. (2001) एस. वी. ''मिरेकल।'' [27]सी. एस. लुईस, *मिरेक्ल्स: ए प्रिलिमिनरी स्टडी* (न्यू यार्क: मैकमिलन कं., 1947), 10. [28]हैनरी स्नाइडर गेहमन, संपा., ''मिरेकल,'' द *न्यू टैस्टामैंट डिक्शनरी ऑफ द बाइबल* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1970), 622. [29]हैग्नर, 211.